आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 277 | ARYA SABHA MAURITIUS | 29th Sept. to 18th Oct. 2013

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ।।

Om prātaragnim prātar indram havā mahé prātar mitrā varunā prātar ashvinā.
Prātar bhagam pushanam brahma naspatim prātah soma muta rudram huvéma.

Rig. Véda 7/41/1

O Seigneur ! Toi qui es le créateur du ciel, du soleil, de la terre, de la lune, des planètes et de l'univers, toi qui es la source de toute connaissance véritable qui comprend entre autres les sciences et les arts, toi qui possèdes toutes les richesses matérielles du monde, toi qui détiens toute capacité physique, intellectuelle, spirituelle, artistique et esthétique que tu transmets à l'homme. Tu es le maître suprême de l'univers.

Tu es aussi notre père nourricier et notre protecteur. Tu nous guides dans le bon chemin de la vie. Par ton omniscience tu éloignes de nous tous les dangers, les fléaux, les maladies, les péchés et les problèmes auxquels nous sommes exposés.

Nous nous soumettons à ta volonté à cette heure du matin et nous te prions de nous accorder ta bénédiction.

N. Ghoorah

मानव-निर्माण-योजना

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

मानवेतर प्राणियों के पास केवल स्वाभाविक बुद्धि है। वे अपनी बुद्धि का विकास करके मानव जैसे उन्नत नहीं हो सकते। मनुष्य और पशु में यदि कोई विशेष अन्तर है तो वह मात्र बुद्धि के कारण है। मनुष्य चाहता है कि वह चाँद को छू ले, विविध ग्रहों की यात्रा करके लौट आये, आश्चर्यजनक आविष्कार करके, इतिहास के पन्नों में अपना नाम लिखा जाए। इसके लिए वह अपने ज्ञान और बुद्धि को विकसित करता रहा है।

बुद्धि का दूसरा सोपान - 'मेधा' है। मेधा-प्राप्ति के लिए मानव अपने सृष्टिकर्ता से प्रार्थना करता है –

यां मेधां देवगणा, पितरश्चोपासते
तया मामद्य मेधया अग्ने मेधाविनं कुरु।

अर्थात् हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् ! जिस बुद्धि की देवगण और पितृगण चाहना करते रहे हैं, उस मेधा-बुद्धि का वरदान देकर मुझे बुद्धिमान् बनाइये।

यह मेधा प्राप्त कैसे होती है? इस संबन्ध में न्यायदर्शन का वचन है – **'संस्कार जन्यं ज्ञानं स्मृतिः'** – मनुष्य की बुद्धि को तीव्र बनाने के लिए संस्कार से उत्पन्न ज्ञान की आवश्यकता होती है। बुद्धि और ज्ञान के कारण ही मनुष्य धरती पर चहुँ ओर अपनी विजय-पताका फहरा लेता है ।

संसार के विविध पदार्थ दो भागों में विभाजित हैं – चेतन और अचेतन, अर्थात् जंगम तथा स्थावर। स्थावर पदार्थ सामान्य जगत् में आते हैं। उनमें किसी प्रकार का विशेष भाव नहीं है। वे प्रकृति के आधार पर बनते और बिगड़ते हैं। उनके बनने से मानव को प्रसन्नता तो होती है, जैसे पेड़ों को फलों से लदे देखकर, खेतों को अन्न से भरे पाकर, वसन्त ऋतु के आगमन से प्राकृतिक सौन्दर्य निहार कर आदि। इनके बनने से मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी इनका भोग करके तृप्त हो जाते हैं।

संस्कार के अभाव में स्थावर पदार्थ बिगड़ते हैं, फूल और फल सड़ने लगते हैं। इस सड़ांध के कारण भावनाप्रिय व्यक्ति दुखी हो उठते हैं। बाग़-बगीचे में फल-फूल के बिगड़ने से जैसे माली को कष्ट होते हैं, खेतों की उपज को बिगड़ते देखकर जैसे खेतिहर दुखी हो उठते हैं, वैसे ही मानव में दानवता के आ जाने से साधु-सन्त दुखी हो उठते हैं।

फूल-फलों और अन्नों को स्वस्थ बनाये रखने के लिए जैसे धरती को जोतना पड़ता है, खाद डालनी पड़ती है, बीजों और पौधों की सिंचाई करनी पड़ती है, दवाई डालनी पड़ती है, वैसे ही मनुष्य को बुद्धिमान् एवं ज्ञानवान् बनाने के लिए संस्कार की आवश्यकता होती है। 'संस्कार' का अर्थ है अच्छा करना। सम् उपसर्ग को 'कृ' धातु के साथ जोड़ने से 'संस्कार' शब्द बनता है। 'सम्' का अर्थ है, अच्छा, और 'कृ' का अर्थ है करना।

हम देखते हैं, पशुओं में भी अच्छी नस्ल के लिए, अनेक प्रयत्न किये जाते हैं। गाय, घोड़ा, बैल आदि को तो विशेषरूप से बनाते ही हैं। उनके निर्माण में, सरकार भी अधिक ध्यान देती है। पशुओं के अस्पताल भी हैं, ताकि पशु नीरोग रहकर मानव के लिए लाभदायक सिद्ध हों।

जब पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों के लिए संस्कारों का महत्व है, तब परमात्मा की अद्भुत रचना मानव के लिए संस्कार तो परमावश्यक है। संस्कारों के ही कारण ऋषि, मुनि, महात्मा, ज्ञानी, योगी, परिश्रमी, सेनानी, पोषण करने वाले, सेवा करनेवाले, सज्जनों का निर्माण होता है। मनुष्यों के अनेक विभाग हैं, उन विभागों के आधार पर उनकी ज़िम्मेदारियाँ भी हैं, अतः उनके लिए प्रशिक्षण का भी कार्य आवश्यक होता है।

मनुष्य को उत्तम बनाने के लिए, अनेक पाठशालाएँ, बड़े-बड़े विद्यालय, कॉलेज, यूनिवर्सिटियाँ और बड़ी-बड़ी प्रशिक्षण-संस्थायें खुली हुई हैं। इन शिक्षण-संस्थाओं का उद्देश्य यही है कि मनुष्य का निर्माण हो। बिना शिक्षण और प्रशिक्षण के किसी को श्रेष्ठ नहीं बनाया जा सकता। उदाहरणार्थ सेना-प्रशिक्षण के लिए अनेक प्रकार की संस्थायें हैं, जिनमें तीन प्रकार की सेनाओं का निर्माण होता है – वायु-सेना, जल और थल-सेना। वायु-सेना का प्रशिक्षण पृथक होता है ।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

सत्य और अहिंसा का पुजारी

भारत एक ऐसा महान देश है, जिसकी पुण्य-भूमि पर अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं। इतिहास साक्षी है कि जब-जब भारत की धरती पर कोई भारी संकट आया, तब-तब उस संकट को दूर करने के लिए कोई न कोई कल्याणकारी महापुरुष पैदा हुए, उन महापुरुषों में हम भगवान् राम, योगीराज कृष्ण, महात्मा बुद्ध, स्वामी शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी आदि लोगों के नाम आदर पूर्वक लेते हैं।

सन् १८६९ ई० में दो अक्टूबर को एक महान हस्ती का जन्म भारत के गुजरात प्रान्त में हुआ, जो सत्य और अहिंसा का पुजारी बनकर मानव-समाज को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते रहे, उनके सत्य व्यवहार, प्रेम तथा दया का भाव देखकर लोग उन्हें 'बापू' कह कर पुकारते थे।

बापू जी सचमुच एक महात्मा थे, वे सत्य और अहिंसा का पालन करने वाले महापुरुष थे, सभी पर दया-भाव प्रकट करके प्रेम बढ़ाने वाले महापुरुष थे। इन्हीं कारणों से लोग उन्हें महात्मा गांधी जी कहते थे। वे सत्य के मार्ग पर चलकर सभी के दिलों में बस गए, मानव-सेवा करके सारे विश्व में लोकप्रिय हुए। महात्मा गांधी जी रामायण के परम पाठक थे और परम राम-भक्त थे। वे रामायण का यह पाठ खूब समझ गए थे कि

परहित सरिस धरम नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।

इसीलिए वे कभी भी किसी प्राणी को दुखित करना, कष्ट पहुँचाना, ठगना, लूटना पाप समझते थे और आदि दुर्व्यवहारों को अधर्म समझते थे। गांधी जी मानव को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाना अपना परम धर्म मानते थे।

महात्मा गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ा कर समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधा। इसी हथियार से भारत को आज़ाद किया, सारी दुनिया उनकी दी गई महान् शिक्षा से लाभ उठा रही है और बापू जी की महानता का गुणगान करती है।

बापू जी को भारत के राष्ट्रपिता कहे जाते हैं, क्योंकि उन्होंने सभी भारतवासियों के दिल में स्वदेश-प्रेम उत्पन्न करके स्वराज प्राप्त करने की भावनाएँ प्रदान की। महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से भारतीय लोग आज़ादी के आंदोलन में समर्पित हो गए और दुर्भाग्य से बिना ही अस्त्र-शस्त्र प्रयोग किए सत्य और अहिंसा के बल पर आज़ाद हो गए फिर आज़ादी की खुशी सारे भारत में छा गई। मगर कुछ ही समय में किसी हत्यारे के हाथों, उनकी हत्या हो गई। बापू जी ने तो स्वराज दिलाने के लिए अपने जीवन का बलिदान किया और सत्य तथा अहिंसा के मार्ग पर मानव-समाज को लाकर खड़ा किया। हम उस महान् आत्मा को कभी भूल नहीं पाएँगे।

गत दो अक्टूबर को महात्मा गांधी जी की १४४ वीं वर्षगाँठ मनाई गई । हमें उस महान व्यक्ति की जन्म तिथि के उपलक्ष्य में, उनकी दी हुई शिक्षा को ग्रहण करके अपने जीवन में उतारना है, तभी हम सत्य और अहिंसा तथा प्रेम के जरिए एक दूसरे के हित का ख्याल करके सुखी जीवन व्यतीत करने का कर्म निभा पाएँगे ।

आज इंसान थोड़ा भटकता जा रहा है, लोग झूठ, बेईमानी, हिंसा की राह पर कदम बढ़ा रहे हैं, क्रूर, हत्यारे, मिथ्यावादी और धोखेबाज होते जा रहे हैं। हमारे जीवन में ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता आदि दुर्गुण उत्पन्न हो रहे हैं। गैरों के प्रति प्रेम-भाव घटता जा रहा है, हिंसा एवं हानि पहुँचाने की भावनाएँ पनप रही हैं, हमें पुनः सत्यता पूर्वक एक अहिंसक प्राणी बनकर सब के हित में कार्य करना चाहिए, तभी हमारे जीवन में एक दूसरे के प्रेम भाव से सुख-शान्ति का राज्य होगा।

हम गांधी जयन्ती के अवसर पर उनके सात्विक जीवन से प्रेरित होकर सत्य और अहिंसा के पुजारी बनने का प्रयत्न करेंगे तथा उनकी पुस्तकों का गहरा अध्ययन करके ज्ञान ग्रहण करने में सफल होंगे, तभी हमारी बेचैनी, क्रुरता, अशांति आदि दूर होंगी और पुनः एक आदर्श मानव समाज का निर्माण होगा ।

बालचन्द तानाकूर

श्रेष्ठतम कर्म क्या है?

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न,उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

श्रेष्ठतम कर्म वह है जो किंचित स्वार्थ रहित किया जाता है, जिसमें लेश मात्र भी स्वार्थ की गंध नहीं होती। यदि तनिक भी स्वार्थ हो तो वह श्रेष्ठतम क्या, श्रेष्ठ भी नहीं कहा जाएगा।

श्रेष्ठ कर्म जो किये जाते हैं वे वरदान हैं, आपकी आत्मा को पवित्र से पवित्रतर और पवित्रतर से पवित्रतम् बनाने की प्रक्रिया में। वे आप की आत्मा को ऊपर उठाने में जितने सार्थक होते हैं शायद ही कोई दूसरा उपाय हो सकता है। पर दुर्भाग्यवश श्रेष्ठ कर्म करने वाले सोचते हैं कि उनके द्वारा किये गये कर्म के पुण्य से उनके गत और विगत कुकर्मों के द्वारा अर्जित पापों के परिमाण में कमी आएगी याने पाप कटित होंगे। वे सोचते हैं कि बैंक से लिये गये उधार में जैसे कटौती होती है, वैसे ही किये गये पाप में भी कमी आएगी। पाप और पुण्य में ऐसी बात नहीं होती। ऐसे सोचने से उल्टे पाप की गठरी और भारी हो जाती है। पाप और पुण्य में सौदे-बाज़ी नहीं होती, कि आपने पाप किया और परमेश्वर से जाकर गिढ़गिढ़ाया और पाप कटित हो गया। अगर ऐसा होता तो खूब पाप करते और बदले में खूब पूजा पाठ करते, पुण्य का कर्म करते और पाप कटित हो जाते ।

श्रेष्ठतम कर्म करने के तत्काल बाद उसे भूल जाना चाहिए। सोचना चाहिए कि मेरा फ़र्ज़ था मैंने कर दिया। करने के बाद सोचेंगे कि मैंने कितना अच्छा कर्म किया। उसमें स्वार्थ आ जायगा और जहाँ स्वार्थ आया तो सभी फल पानी में चला जाएगा इसलिए कहावत प्रसिद्ध है, *'नेकी कर और दरिया में डाल।'*

कोई भी शुभ कर्म करने से पहले आपको निश्चय से जान लेना चाहिए कि यह करने में मेरा किसी स्वार्थ की पूर्ति तो नहीं हो रही है? अगर ऐसा सोचने में सफल हो गए तो समझो उसे पूरा करने के बाद उसे भूलने की क्षमता स्वतः आ जाएगी। इसकी सफलता आप के हाथ में है।

मिसाल के तौर पर यदि आप किसी अज़ीज दोस्त के लिए कोई उपकार का कार्य कर रहे हो तो क्या आप ढिंढोरा पीटते हैं या, उसका प्रचार-प्रसार करते हैं कि मैंने फ़लाँ की भलाई की? बदले में आप तो उसका धन्यवाद भी नहीं स्वीकारते। आप तो उसके प्यार के लिए करके भूल जाते हैं। आप तो केवल उसकी भलाई के लिए करते हैं। कभी कभी उसका भला करने के लिए महान त्याग भी कर देते हैं। उस त्याग में भी उस संकट में भी आपको बेहद प्रसन्नता होती है।

ऐसा होता है श्रेष्ठतम कर्म। दायें हाथ ने दिया तो बायें हाथ को भी खबर नहीं होनी चाहिए।

स्मृति यज्ञ

लावेनीर आर्य समाज तथा मोहनलाल मोहित फ़ाउंडेशन के सहयोग से गत रविवार २२ सितम्बर २०१३ को प्रातःकाल आठ बजे लावेनीर आर्य मंदिर में स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी की १११ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर एक स्मृति यज्ञ आयोजित किया गया था। पंडित राजेन तानाकूर जी और पंडिता विश्वानी हेमराज जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। उस अवसर पर भारत से पधारे हुए माननीय सुरेन्द्र दयाल जी, डा० जीतेन्द्रसिंह चिकारा जी, आचार्य चारुदत्त सोहर जी, आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, श्रीमती रत्नभूषिता पुचुआ जी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

अवसर का लाभ उठाकर डा० चिकारा जी तथा आर्य सभा के प्रधान ने महात्यागी, तपस्वी, बुद्धिजीवी एवं निस्वार्थ समाज-सेवी आर्य नेता स्वर्गीय मोहित के आदर्श जीवन पर प्रकाश डाला। मोहनलाल मोहित सरकारी पाठशाला की दो छात्राओं ने उनकी सामाजिक सेवा और दानवीरता पर लघु भाषण दिए। मनोरंजन के लिए श्री ग्यान महिपतलाल तथा समाज की छात्राओं द्वारा संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में शान्तिपाठ के पश्चात् सभी को मिठाई से सत्कार किया गया ।

प्रधान
मोका आर्य ज़िला परिषद्
बालचन्द तानाकूर

नये समाज की स्थापना

सहर्ष सूचित हो कि आर्य सभा के तत्वावधान में तथा मोका आर्य ज़िला परिषद् के पूरे सहयोग से गत रविवार ६ अक्टूबर २०१३ को सायंकाल में पाँच बजे साँसुसी मोंताईं ब्लांश में आर्य समाज की एक शाखा स्थापित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ द्वारा किया गया था। मोका प्रान्त के वरिष्ठ पुरोहित पं० सत्यानन्द फाकू जी और पंडिता सविता ठुकोरी जी एवं पंडिता चन्द्रिका राजू जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ।

उस अवसर पर आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, परिषद की ओर से श्री नरेन्द्र घूरा जी, श्री कृष्णदत्त सिबरण जी, श्री देवनन्न बाजनाथ जी, श्री रामकरण जोखू जी, श्री विद्यान प्रभु जी और कुमारी मोहिनी प्रभु जी उपस्थित थे।

श्री जनकप्रसाद रनू जी के स्थान पर यज्ञ के बाद एक छोटा कार्यक्रम आयोजित किया गया और शान्तिपाठ के बाद सभी लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

आर्य समाज की नींव तो डाली गई, अब ईश्वर से यही विनती है कि यह समाज वहाँ के सदस्यों के प्रेम और सुदृढ़ संगठन से जागरूक रहे।

साल २०१३-२०१४ के लिए निम्न अधिकारी और सदस्य नियुक्त हुए :– *प्रधान* - श्री जनकप्रसान्द रनू, *उप-प्रधान* - श्री अशोक सुबेन, *मन्त्री* - श्री भवन पति गणेसी, *उपमंत्री* - श्री सुनिल रनू, *कोषाध्यक्ष* - श्री महादेव दयाल, *उप-कोषाध्यक्ष* - श्री सन्जय भोयरब, *सदस्य* - श्री श्री ओकी लाल दोकी, ब्रिज कोदाई, चन्द्रजय रनू, सत्यानन्द कोली, दादोन ब्रिज लाल, ब्रिज रामदेवर, मुनशी रामदेवर, अशोक बेंगू, ईश्वर बेंगू, देवानन्द सिरतन, गांधी सुकाई, जयश्री रामरतन, जय गणेसी, दयानन्द रनू, राम रामध्यावन, चुनीलाल चुनी, बाबाजी सुगन्ध, रवि रनू, बेनी तुलसी, देवराज फथी।

पं० स. फाकू
मन्त्री
मोका आर्य ज़िला समिति

पृष्ठ १ का शेष भाग

मानव-निर्माण-योजना

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

उनमें भी अनेक विभाग हैं। उनके आधार पर उनका निर्माण किया जाता है। थल - सेना के प्रशिक्षण के लिए भी अनेक विभाग हैं, जिनके द्वारा प्रशिक्षण पृथकरूप से करके सैनिकों का निर्माण किया जाता है। जल-सेना के प्रशिक्षण के लिए भी अनेक विभाग हैं, जिनके द्वारा प्रशिक्षण देकर जल-सैनिकों का निर्माण किया जाता है।

किसी भी कार्य को करने के लिए, किसी भी पद के लिए व्यक्ति को अनुकूल प्रशिक्षण देकर उसका निर्माण किया जाता है। यदि मानव के निर्माण के लिए प्रशिक्षण नहीं होगा तो वह जंगली वृक्ष की भाँति पैदा हो कर बढ़ता रहेगा, मनमानी फल प्रदान करता जायेगा। मानव को संस्कृत करने के उद्देश्य से ही उन्होंने संस्कार बनाये, जो आत्मा के लिए बहुमूल्य हैं।

संस्कार मनुष्य को उन्नति के पथ पर ले जाता है। वह एक नहीं, सोलह हैं। कृष्णपक्ष के गर्भ में चन्द्र है। उसको पूर्णिमा तक पहुँचाने के लिए अनेक कार्य करने पड़ते हैं। इसके लिए यज्ञ का भी विधान है। अष्टमी अमावस्या का यज्ञ मानो शुक्ल पक्ष लाने का ही यज्ञ है। अतः वह भी एक संस्कार है। संस्कार वह कार्य है, जो सोई हुई आत्मा को जागृत करता है, जागृत आत्मा को सुवर्णमय बनाकर उसमें तेजस्विता लाता है। मानव को मेधावी, ज्ञानी और सुसंस्कृत बनाने के लिए जिन सोलह संस्कारों का विधान किया गया है, उनका संक्षिप्त परिचय निम्न लिखित है -

१. गर्भाधान - पिता अपने पुत्र का निर्माण अपनी आत्मा की भाँति करना चाहता है, अतः विशिष्ट मंत्रों से आहुतियाँ देकर ईश्वर से प्रार्थना करता है। जैसे मनुष्य बाज़ार से यथेष्ट पदार्थ ले आता है, वैसे ही पिता यथेष्ट आत्मा का आह्वान् करता है। वह आत्मा उसे मिल भी जाती है।

२. पुंसवन - अभी शरीर नहीं बना है, जल ही है। वह पुत्र चाहे तो पुत्र, पुत्री चाहे तो पुत्री पा सकता है। इसी संस्कार से सुन्दर और मनोवांछित प्रजा को प्राप्त कर लेता है। कह देते हैं अच्छा कौन नहीं चाहता? परन्तु भगवान् दे भी तो! पर वेद कहता है, परमात्मा वही देता है, जो तुम माँगते हो।

३. सीमन्तोन्नयन - माता के गर्भ में शरीर बन गया है, पर अभी कुछ सीमा में बन्धा है, इस संस्कार में हर प्रकार की सीमा समाप्त हो जाती है, भोजन में भी कोई पथ्य नहीं रह गया।

४. नामकरण - इसका तो जीवन पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। कई बच्चे उत्तम नाम से उत्तम बन जाते हैं। अतः नाम को पूर्ण विचार करके रखना चाहिए।

५. निष्क्रमण - बच्चे को वायु में बाहर ले जाना चाहिए। यह संस्कार तीसरे मास में किया जाता है। इसमें सूर्य तथा चन्द्र दोनों के दर्शन कराये जाते हैं, जिससे बालक सूर्य के समान तेजस्वी तथा चन्द्र के समान सौम्य स्वभाववाला बने ।

६. अन्नप्राशन - यह जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्कार है। जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन। भोजन सात्विक होगा तो बालक सात्विक गुण वाला होगा। यदि राजसिक होगा तो राजसिक बनेगा। यदि तामसिक भोजन होगा तो तामसिक गुणवाला बनेगा। अतः पहले ही कह दिया – **'घृत औदनम् तेजस्कामः'** – तेज की कामना करने वाला पिता, बच्चे को घी-चावल खिलाये। दही, मधु, घृत मिलाकर भी अन्न खिला सकते हैं। इससे बुद्धि बढ़ती है ।

७. चौलकर्म, चूड़ाकर्म – 'चूड़ा' या 'चौल' शब्द सिर के बालों के लिए आता है। इससे अन्दर के सभी ज़हर निकल कर शान्ति, स्नेह, आदि गुण भर जाते हैं। क्रोध का कारण मस्तिष्क है। यदि मस्तिष्क साफ़ रहा तो सभी गुण भर जाते हैं।

८. कर्णवेध - कानों का छेदना भी बहुत आवश्यक है । उनमें सोने का रस लगने से, अनेकों बीमारियाँ दूर होती हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में रक्त-चाप (blood pressure) के लिए कान खिंचवाते हैं ।

९. यज्ञोपवीतम् - अब तक बच्चे को भौतिक गुणों के लिए, संस्कार दिये। ये संस्कार आध्यात्मिक उन्नतिवाला संस्कार है, आयुष्यम् - अग्रयं शुभ्रं, अन्धकार प्रति मुञ्च, आयु पाने के लिए, आगे बढ़ने के लिए उज्ज्वलता पाने के लिए, अन्धकार से बचने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

१०. वेदारम्भ - यह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। इससे पता चलता है कि वेद पढ़ने का आरम्भ बचपन से ही होना चाहिए, जब कि खून अभी बिल्कुल साफ़ हो। अनेकों अवगुणों के भरने के बाद वेदों का ज्ञान नहीं भर सकते। इस संस्कार में बटुक दो महान् इच्छाएँ गुरु के सामने रखता है, तथा उसके पालन में हर प्रकार के दुख-कष्ट झेल लेता है। आचार्य का उपदेश अत्यन्त महत्वपूर्ण है – तू ब्रह्मचारी है, जल पीकर रहना, अर्थात् भोजन के लिए स्वाद मत देखना। निरन्तर कार्य करना, दिन में मत सोना, आचार्य के अधीन होकर वेद पढ़ना। कितना कठिन तप है। इसी से आचार्य भी उसे अपने गर्भ के बच्चे के समान देखता है। इसमें दो विषय बहुत जरूरी हैं – प्रथम, हे अग्ने तुम देवताओं के यज्ञ की रक्षा करते हो, मैं मनुष्यों के यज्ञ की रक्षा करनेवाला बनूँ। मैं उत्तम जीवन पा सकूँ। हे आचार्य! आप मेरा जीवन हैं। मैं मेधावी बनूँ। मैं असामान्य बनना चाहता हूँ। यशस्वी, तेजस्वी, ब्रह्मचारी बनना चाहता हूँ। अतः मुझे सामान्य भोजन नहीं, वेद ज्ञान का अन्न खिलाइये।

दूसरा, ब्रह्मचारी समिधा बनकर आता है। हे अग्ने! मेरी समिधा को भी अपनी समिधा छुआकर मुझे आयु से, मेधा से, वर्चस्विता से, उत्तम प्रजा के योग्य, उत्तम धन के कमाने योग्य बनाइये। मेरे आचार्य भी उत्तम जीवन प्राप्त करें। तभी तो मेरा जीवन है। अतः अपने आचार्य के हाथ का अन्न खाऊँ। इस प्रकार विशिष्ट प्रार्थनायें करता है।

११. समावर्त्तन संस्कार – ब्रह्मचारी ने सम्पूर्ण कामना को अपने तप से प्राप्त किया। अब आश्रम छोड़ने का समय आ गया। उसके बाद भी अपने जीवन को धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में, उत्तमता से समर्पित करना चाहता है। अतः वेदारम्भ के मंत्रों को पुनः दोहराकर, आठ प्रकार के जल से भरे घड़े, जिसमें समुद्र, कुआँ, तालाब, पाँच प्रकार की नदियों का जल भरा होता है, वेदी के उत्तर भाग में पहले ही से रखा जाता है, उससे स्नान कराया जाता है । इसमें चार प्रार्थनाएँ हैं – जल की भाँति ऐश्वर्यवाला बनूँ। यशस्वी बनूँ, ज्ञानी बनूँ, तथा ब्रह्म की शक्ति प्राप्त करूँ।

१२. विवाह - इसमें तो **'धौरहं पृथ्वी त्त्वम्'** का संकल्प सम्पूर्ण जगत् का त्राता बना देता है। और क्या चाहिए दुनिया में? मानव गृहस्थ में आकर सम्पूर्ण बनता है। वही ममता, वात्सल्य, प्रेम, श्रद्धा, पूजा की प्रतिमूर्ति है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

गतांक से आगे

पिण्ड और ब्रह्माण्ड

पण्डित यश्वन्तलाल चुड़ामणि

ओं सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः।

ऋग० १०.१६.३

एक और महत्वपूर्ण तत्व है, जो ब्रह्माण्ड और मानव शरीर में बराबर विराजमान है। वह है 'लोक' जिनकी संख्या चौदह बताई गई है। ये दो भागों में विभक्त हैं। एक नाम है 'लोक' और दूसरे का 'पाताल'। मनुष्य शरीर में कमर के ऊपर से लेकर सिर की चोटी तक सात लोक हैं और कमर के नीचे से लेकर तालुओं तक सात पाताल हैं। सन्धया करते समय सात प्राणायाम मन्त्रों का मानसिक जाप करते हुए इन्हीं सात लोकों की ओर ध्यान केन्द्रित किया जाता है– **'ओं भूः ओं भूवः ओं स्वः ओं मः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम्।'** योगी जन। इन सात लोकों को ही सात चक्र कहते हैं। मनुष्य शरीर के पहले लोक का नाम है 'भूलोक' जो दो गुप्तेन्द्रियों के बीच में पाया जाता है। यही मूलाधार चक्र का केन्द्र भी है और इसका मन्त्र है **'ओं भूः'**। दूसरा लोक 'भुवर्लोक' है जो गुप्तेन्द्रियों का के ऊपर स्थित है। यह स्वाधिष्ठान चक्र का केन्द्र है और इसका मन्त्र है **'ओं भूवः'**। तीसरा लोक 'स्वर्गलोक' कहलाता है। इसका स्थान नाभि है और चक्र मणिपुर। इसका मन्त्र है **'ओं स्वः'।** चौथा लोक **'महर्लोक'** है जो हृदय में पाया जाता है। हृदय-चक्र को अनाहत-चक्र कहते हैं। इसका मन्त्र है **'ओं महः'**। पाचवा लोक 'जनलोक कहलाता है जो मनुष्य के कण्ठ में होता है। इसे विशुद्धि-चक्र कहते हैं। इसका मन्त्र है **'ओं जनः'**। छठा लोक 'तपलोक' है जो ललाट पर होता है और यहीं पर आज्ञा-चक्र होता है। इसका मन्त्र है **'ओं तपः'**। और सातवें लोक का नाम है 'सत्यलोक' जो ब्रह्मरण्ध्र में होता है । यह कपाल का ऊपरी भाग है। ब्रह्मरण्ध्र के चक्र को सहस्त्रार-चक्र कहते हैं और इस लोक का मन्त्र है **'ओं सत्यम्'**। इन सात लोकों को योग, प्राणायाम् और ध्यान द्वारा सशक्त बनाया जाता है।

इसी प्रकार पाँवों से लेकर कटि-प्रदेश तक सात अन्य लोक पाये जाते हैं जिन्हें पातालों का केन्द्र इस प्रकार निर्धारित किया गया है – पावों के तले जो क्षेत्र है उन्हें 'तल' कहते हैं। पाँव के ऊपरी भाग को तलातल कहते हैं, एड़ियों के बीच में 'महातल' स्थित है। एड़ियों के ऊपर 'रसातल' है। घुटनों के मध्य में वितल विराजमान है। जंघाओं के मध्य सुतल है। सातवाँ लोक उरुओं के बीच में पाया जाता है और उसका नाम ही है 'पाताल'। इस प्रकार ब्रह्माण्ड की तरह ही यह शरीर भी सात लोकों और सात पातालों से युक्त है। शरीर के भीतर इन्हीं लोको और पातालों को 'चौदह भुवन' कहते हैं।

परमात्मा ने दस प्राण, सात चक्र और चौदह भुवनों के अलावा इस मानव तन को अन्य दिव्य गुणों से युक्त किया है। इन में तीन गुण, पाँच कोष, सात रत्न, आठ संस्थान, सोलह कलाएँ इत्यादि उल्लेखनीय हैं। शरीर के ये सारे तत्व ब्रह्माण्ड के साथ जुड़े हुए हैं। इसी लिए कहावत है -- *'जो पिण्डे सो ब्रह्माण्डे।'*

मा नस्तारिषुरभिमातयः।

(अथर्व २.७.४)

अभिमानी शत्रु हम पर आक्रमण न कर सकें ।

ओ३म्

आर्य सभा मॉरीशस

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (५ - ८ दिसम्बर २०१३)

आदरणीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते ।

सेवा में विदित हो कि **आर्य समाज के पंजीकरण की शताब्दी** के संदर्भ में आर्य सभा मॉरीशस एक **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन** का आयोजन बड़े भव्य रूप से **दिनांक ५ से ८ दिसम्बर २०१३** तक कर रही है।

आर्य समाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों और परिवारों से निवेदन है कि इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में तन, मन, धन से अपना सहयोग सभा को प्रदान करने की चेष्टा करें ।

****

International Arya Maha Sammelan 2013

Dear Members,

This is to inform you that the Arya Sabha Mauritius is organising an **International Aryan Conference to mark the Centenary celebration of the registration of Arya Samaj in Mauritius from the 5th December to 8th December 2013.**

All members of the Arya Samaj are requested to participate actively in this event and to contribute for the success of the same.

H. Ramdhony
Secretary

पृष्ठ २ का शेष भाग

१३. गृहाश्रमविधि – इसके पश्चात् गृहस्थाश्रम को कैसे निभाये आदि को जानना आवश्यक है । अतः वह उसके लिए भी प्रार्थना करता है। पाँच यज्ञों को नित्यप्रति करके इहलौकिक और पारलौकिक सुख का भागी बनता है ।

१४. वानप्रस्थ – इससे वैराग्य पाने की शिक्षा ग्रहण करता है । धीरे-धीरे **'इदन्न मम'** को धारण करता है।

१५. संन्यास – मैं तो वही अग्निमय बन गया। स्वाहा, और इदन्न मम उसके जीवन में ही घुल गया। और क्या चाहिए? अब सर्वसमर्पण की तैयारी कर रहा है। उसके अन्दर पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, दस प्राण, बारह आदित्य, आठ वसु, चार अन्तःकरण, पाँच कोश, आत्मा, तथा शरीर ५१३ तत्त्वों को लेकर प्रभु को स्वयं समर्पित कर देना चाहता है। यहाँ तक मानव का अपना अधिकार है। १६ वाँ संस्कार पराये के आधीन है।

१६. अन्त्येष्टि संस्कार – इतना परिपक्व घर दूसरे के हाथ में सौंपना है। अतः वह अपनी अन्तिम इच्छा भी उनके सामने रख देता है। इसीलिए इसको अन्त्येष्टि कहते हैं। घर से लेकर श्मशान तक सम्पूर्ण विधि हो जाती है। यह भी यज्ञ से होता है। इसमें १२१ मंत्रों की आहुतियाँ हैं। यही १२१ तत्व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करते हैं। इन सबको त्याग कर आत्मा उस परमात्मा में मिल जाता है।

ये सोलह संस्कार मनुष्य की सोलह कलाएँ हैं। इसी से मानव पूर्ण ज्योतिर्मय बन जाता है। परमात्मा भी १६ कलाओं वाला है।

जन्यं ज्ञानम् – इन सम्पूर्ण कलाओं से वह उस प्रभु को जानना चाहता है। इनसे जो उत्पन्न ज्ञान है, वही सच्चा ज्ञान है।

यह एक जन्म का ज्ञान नहीं हो सकता। जन्म-जन्मान्तरों से आत्मा संस्कारों के रूप में लेकर आती है। ये सभी आत्मा पर अपनी छाप रखते हैं। वही छाप समय-समय पर बुद्धि पर प्रभाव पैदा करती है, मानो किसी पर्दे पर चित्र का प्रभाव होता है। उसको मन ग्रहण करता है। वह पुरानी बातें मन की सहायता से, चेतन शक्ति में आती हैं। फिर उसके बाद अहं अर्थात् आत्मीयता गुणों को पहचान कर याद करता है, इसी को – **स्मृतिः** – कहते हैं। सामान्य अर्थ इसका कि पुरानी बात को याद करना है।

ये स्मृति मनुष्य को जाने कहाँ-कहाँ तक ले जाती है। लोग इसी को पूर्व कर्मों का फल भी कहते हैं। चाहे जो भी हो, इतना ज़रूर हमारा उद्देश्य है कि मनुष्य को अपने जीवन में संस्कारों को सींचना है, जिससे अगला जन्म भी इन्हीं संस्कारों के बल पर स्मृति बनकर जीवन को श्रेष्ठ बना सके ।

विश्व के प्रांगण में जो भी ज्ञानी, ध्यानी, मेधावी बने हैं, उनके माता-पिता और गुरु जनों ने उन्हें किसी-न-किसी रूप में उपर्युक्त संस्कारों से अवश्य ही संस्कारित किया है। ऐसे संस्कारों के सुवास से ही मानव सुवासित होता है।

यज्ञ, योग और आयुर्वेद पर कार्यशाला

पंडित धर्मेन्द्र रिकाई

आर्य पुरोहित मण्डल की ओर से आर्य सभा के तत्वावधान में सोमवार तिथि १६ सिप्तम्बर २०१३ को प्रातःकाल में १०.०० बजे से २.०० बजे तक आर्य भवन, पोर्ट लुई में डाक्टर जीतेन्द्र सिंह चिकारा जी द्वारा यज्ञ, योग और आयुर्वेद पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। कार्यशाला में लगभग पचास पुरोहितों एवं पुरोहिताओं की उपस्थिति थी।

डाक्टर चिकारा जी ने आरम्भ ही में बताया कि पुरोहित आर्य जगत् के प्राण हैं। पुरोहित में यजमान से अधिक श्रद्धा होनी चाहिए। वेद माता कहती है, यह शरीर तुझे यज्ञ के लिए मिला है। यज्ञ के कुछ विशेष मंत्रों का अर्थ यजमान को देने से बहुत लाभ होता है। अतः प्रार्थना करते समय मंत्रार्थ का चिन्तन करें और पुरोहित के साथ यजमान भी ईश्वर भक्ति में विलीन हो जायें। मंत्र हमें परमात्मा से जुड़ते हैं। यज्ञ की अग्नि हमेशा हँसती रहे, रोये नहीं, जिस यज्ञ में धुआँ उठता है वह तमोगुणी यज्ञ हो जाता है।

डाक्टर चिकारा जी का दूसरा विषय योग था। उन्होंने बताया कि योग की अनेक परिभाषाएँ हैं। यथा मन की वृत्तियों को रोकना, बाह्य मन को विश्राम देना योग है। जब मन विषयों से रहित हो जाता है तो जीवन में शान्ति आ जाती है। आत्मा और परमात्मा के मिलन को भी योग कहा गया है। डाक्टर जी ने योग के आठ अंगों पर विशेष बल दिया। ज्यादा समय योग के दूसरे अंग नियम पर अपने विचार दिये।

कार्यशाला का तीसरा विषय आयुर्वेद था। डाक्टर चिकारा जी ने यह बात स्पष्ट की कि **'आयुर्वेद जीवेम शरदः शतम्'** का ज्ञान देता है। अतः हमें सौ वर्ष तक जीना है। तन के रोग और मन के रोग से हमें बचना है। तनाव मन पर दबाव डालता है फिर तन पर, फिर निश्चित रूप से तब रोग उत्पन्न होता है। आयुर्वेद जीने की कला है, जिससे तन और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। शरीर में वात, पित्त और कफ़ समानावस्था में होना चाहिए। वात के कुपित होने से शरीर में दर्द होता है, पित्त के कुपित होने से जलन होती है, बाल गिरने लगते हैं, रक्तचाप बढ़ जाता है, कब्ज़ सताने लगता है और कफ़ के कुपित होने से शरीर में पानी की व्यवस्था बिगड़ जाती है और शरीर में सूजन होने लगता है। वात, पित्त और कफ़ तीनों के कुपित होने से मधुमेह हो जाता है और अनेक खतरनाक रोग हो जाते हैं। इन तीनों से बचने के लिए डाक्टर जी ने अनेक उपाय बताये। प्रश्नोत्तर से कार्यशाला में चार चाँद लग गये।

सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम् ।
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षय्यत्वाच्च सर्वथा।।

समस्त द्रव्यों में विद्या ही सबसे उत्तम कही गयी है क्योंकि उसे कोई छीन नहीं सकता, उसका मोल नहीं हो सकता और उपयोग करने पर वह नष्ट नहीं होती ।

Vedas and the importance of Forests and Trees

Ravindrasingh Gowd

The Vedas, comprising the Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and the Atharva Ved, are of Divine origin revealed to Rishis Agni, Vayu, Aditya and Angira respectively at the beginning of creation of man 1,960,853,118 years ago for the moral, spiritual, and physical guidance and uplift of humanity. They are the reservoirs of all wisdoms necessary to sustain the whole universe. Unfortunately Man has changed his code of conduct and has interfered with nature for his immediate needs to such an extent that we are now facing the dreadful reactions of climate change, pollution, rise in atmospheric temperature with high concentration of green house gases causing a negative impact in our eco-system.

Forests play a major role in maintaining the equilibrium in our eco-system. The Vedas have stressed the need for the protection and development of forests and urge human beings to protect, preserve, nurture and nourish environment and the natural habitation in its pristine glorious form.

The United Nations General Assembly proclaimed the year 2011 as the International Year of Forests (Forests 2011) with the main theme 'Forests for People'. This theme highlighted the relationships between forests and the people who depend on them. The United Nation General Assembly has also declared the 21th March as the International Day of Forests and Trees to raise awareness of the importance of all types of forests and preservation of tress, and the Global celebration of Forests. The Vedas have addressed Man to safeguard the trees as they are verily the treasures for generations.

The very first mantra of Yajur Ved says ***"Ishe twordie toi vayava stha devovaha savita……."***

Oh Lord, we resort to thee for the supply of foodstuffs and vigour(energy)……."

Forests are home to multitude of fauna and flora many of which are enormously beneficial to us. Since the dawn of civilization, man has been interfering with nature for his survival and today due to our unsustainable management practices and over exploitation of forests resources, many areas of the world are being severely affected.

Forests provide shelter to people and enhance biodiversity benefits, are sources of food, medicines, clean water, wood, and biodiesel for clean energy and also play a vital role in maintaining a stable global climate for a healthy environment through absorption of the greenhouse gas carbon dioxide and release of oxygen to the atmosphere.

TAM IT SAMANAM VANINAS CA VIRUDHO
ANTARVATIS CA SUVATE CA VISVAHA

The plants and herbs emit the vital air called samana (oxygen) regularly

Sam Veda 1824

Forests cover 31% of total global land area and store more than one trillion tons of carbon. Over 1.6 billion people's livelihood depend on forest and trade in forestry was estimated to $ 327 billion in 2004 and forests are home to 300 million people around the world. In Mauritius , forests provide direct and indirect employment to some 5000 people in various forestry sectors.

VIRUDO HO VAISVADEVIR
UGRAH PURUSAJIVANIH

Plants possess qualities of all deities. They are saviours of humanity

Ath. Veda 8.7.4

OSADHIR ITI MATARAS
TAD VO DEVIR UPA BRUVE

Plants nourishes and protect the world, hence they are called mothers

Rig Veda 10.97.4

Forests sustain a variety of ecosystems essential for maintenance of life on earth. However , deforestation is moving at an alarming rate with 13 million hectares of trees felled down each year for conversion to agricultural purposes and human settlement. According to the Millennium Ecosystem Assessment about 54 countries have lost around 90% of their forests cover. Deforestation accounts for 12 to 20 percent of global greenhouse gas emissions that contribute to global warming. During the last three centuries of colonization of Mauritius by the Portuguese, French and British, there has been indiscriminate deforestation for agriculture, timber exploitation, sugarcane plantation, human settlements and other infrastructure. The original native forests have almost completely disappeared leaving less than 0.12% of forests and between 1990 and 2010, Mauritius lost an average of 200 ha or 0.15% of forest cover per year.

The latest report from Wikepedia on 6th November 2011 pointed out that the Indian Ocean Islands(Madagascar, Mauritius, Reunion, Seychelles, Comoro) are among the ten most endangered forest of 2011. Thus a reduction in the catchment area could be a cause of the change in the precipitation pattern recorded in the region of Mare aux Vacoas Reservoir resulting in the acute drought being felt for the past few years.

.....to be continued

Sthir Nidhi and Senior Citizens Sub Committee

Decisions taken at the Sthir Nidhi and Senior Citizens Sub Committee meeting held on Saturday 8th June 2013 at 11.00 a.m at the seat of the Arya Sabha.

1. Financial position to date : Rs3,000,000.
2. Two files should be kept, one in Hindi (for Sabha) and one in French (for Committee).
3. A consolidated list to be created.
4. Publication of a magazine in Hindi & English.
5. Awarding certificates and medals to donors of Sthir Nidhi.
6. Donation of books to other organizations.
7. Organisation of annual Mahayajna on special occasions to mark birth day of donors and on our festivals.
8. Names of (at least 10) donors of Sthri Nidhi in each issue of Aryodaye.
9. Helping Matri Sabha in organizing activities nationally and internationally.
10. Keeping in safe custody important documents related to Sthir Nidhi.

Secretary
Sthir Nidhi Committee

ओ३म्

ओ३म् संभालता है हमारी कोमल धड़कनों को,
वह खोल देता है मनुष्य के जिज्ञासु चक्षुओं को,
धीरे-धीरे ओ३म् प्रेरित कर देता है ईश्वर के सभी भक्तों को ।

ओ३म् से जागृत होती है मन में शुद्धता,
वाणी में भर जाती है दिव्य मधुरता,
कर्मों में झलक जाती है लक्ष्य की श्रेष्ठता।

ओ३म् दिखलाता है जीवन में एक नयी दिशा,
अनुशासन का शासन स्थापित सारे विश्व में हो जाता,
और अनंत, अनादि ओ३म् रह जाता है मानव का सच्चा एकमात्र सहारा।

वत्सला राधाकिसुन

CHACHA RAMGOOLAM

Sookraj BISSESSUR, BA, Hons.

For a short span of its history, Mauritius has been very fortunate to have produced a few dedicated men of genius, great builders who have marked its development. And among all these men, none has embodied the Mauritian genius to the extent of encompassing all that is best in it as Sir Seewoosagur Ramgoolam did in the wide scope of his vision, his humanism, his achievements and universalism.

Candidly speaking, the story of Sir Seewoosagur Ramgoolam almost spans the twentieth century and immensely illustrates the glorious moments of its modernization process.

History is being written when the man is no more. "This is the time when history is being made. Throughout the history of the island, ordinary men and women have never lost faith in their destiny and today they are witnessing the fulfillment of their hopes and aspirations……." (Extract from the speech made by SSR on 13th March 1968 (the next day after independence), just after receiving the Constitutional Instruments from the Secretary of States, Mr Anthony Greenwood in the Legislative (now National) Assembly.

Also known as Kewal, Sir Seewoosagur Ramgoolam, was born with the century, on 18th September 1900, at Belle Rive at a time when the country was being seriously affected by outbreaks of epidemics, mass poverty and exploitation of poor people for the benefit of a handful of sugar magnates.

Compassion, mutual understanding, non-violence, tolerance and love for his fellow human beings, all those were precious "ingredients" and noble values, which blossomed into a broad culture of "Plain Living and High Thinking" in Sir Seewoosagur Ramgoolam.

His father, Moheeth Ramgoolam, an Indian immigrant labourer, who lived in the small village of Belle Rive, five miles away from Bel Air, in the Flacq district.

And Kewal grew up as a child of nature, amidst plants, wild grass, flowers, the Camizard mountain, which sent forth innumerable streams down the Belle Rive river, known as "Fourgette ke nadi", from where he accompanied his father to catch fish and prawns in the river.

Really, as a village child, Kewal had lived and shared the daily sufferings of the oppressed, Immigrant labourers. Kewal lost his father at the age of seven and at the age of twelve he met with a serious accident in the cowshed that cost him his left eye permanently.

Again as a sensitive child who grew up as a kind and compassionate soul, Kewal must have vowed to wipe out the tears of his compatriots once he grew up to become the first "governor" of this country.

Most of us should also be aware and conscious of the fact that later, this broad Ramgoolam culture would virtually find expression in the democratic principle of this country, combining the eternal values of the East and the West into a good and perfect blending that went into the shaping of our harmonious multi-cultural society.

God the Almighty had helped Kewal to realize that the only way he could help mop up the suffering of the poor was by serving them as a doctor.

Noticing young Kewal's intellectual aptitude, his brother Ramlall promised to help him through his medical studies in London.

"Objectivism" – Tendency to emphazise on what is objective (that is a doctrine that knowledge of non-ego is prior and superior to that of ego), and this very doctrine inspired Dr. Ramgoolam (SSR) to launch his political career, in 1935, during the centenary celebration of Indian Immigration to Mauritius at the Arya Bhawan in Port-Louis (near Champ de Mars).

Leveller of humanity and Advocate of equality, Sir Seewoosagur Ramgoolam, put into practice the London Agreement of September 1956, whereby it was agreed that the Electoral System should be on the very basis of Universal Adult Suffrage and that the country was eventually ripe for the introduction of the ministerial system which was set up in 1957.

As a matter of fact, on August, 1967, SSR tabled a motion in the Legislative Assembly to give effect to the desire of the people of Mauritius to accede to independence within the Commonwealth of Nations. It was the end of a journey and the beginning of another. He acknowledged the right of the people who had monopolized political and economic power for over a century to fight to death before surrendering any of their feudal prerogatives.

Mauritian flag was hoisted at Champ de Mars on 12 March 1968, in the fresh breeze blowing across a free and independent young country. During this historical moment, SSR recalled with great emotion all the fallen heroes like Anquetil, Rozemont, Seeneevassen with whom he had fought side by side for this day and who were not there to witness the glorious occasion. But, Mr Antony Greenwood had the last word.

"You, Prime Minister, have during more than twenty years been the principal driving force -- leading your country forward. You have been the principal architect of the new nation."

Indeed, Sir Seewoosagur Ramgoolam was henceforth to be known as "The Father of The Nation", the loving "Chacha Ramgoolam", the man who had planned every step of the way towards independence way back in his London days.

He remained Prime Minister till 1982, leading Mauritius to fantastic development in all fields. His friendship with all major nations and leaders of the world made the little island emerge as a great nation.

Sir Seewoosagur Ramgoolam went to Le Réduit as Governor General in 1983 and served his country till he breathed his last on 15 December 1985.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,पी.एच.डी
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,पी.एम.एस.एम
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038